Mahila College Dalmianagar
Department of History
B.A III (Hons)

Dr. Anu Kumari
Date :- 20/2/2024

Topic :-

शाहजहाँ की धार्मिक नीति

=> शाहजहाँ की धार्मिक नीति के मूल्यांकन के लिए यह यह जरूरी है कि पहले उसके द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में जानना।

=> (1) = अकबर के समय से चले आ रहे राजपूतों से वैवाहिक सम्बन्ध को बंद कर दिया गया। न तो स्वयं उसने और न ही उसने अपने किसी पुत्र का विवाह किसी राजपूत राजकुमारी के साथ करवाया।

(2) उसने राजपूतों को न तो बड़ी मनसबदारियाँ प्रदान की और न ही कोई बड़ा पद सौंपा।

(3) अकबर के समय से चली आ रही सिजदा की प्रथा समाप्त कर दी गई।

(4) हिन्दुओं के मुस्लिम दास रखने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

(5) हिन्दुओं के मुस्लिम स्त्रियों से विवाह करने पर प्रतिबंध

लगा दिया। जो हिन्दू विवाह कर चुके थे उन्हें यह आदेश दिया गया कि वे या तो मुस्लिम स्त्रियों को मुक्त कर दें या फिर मुस्लिम रीति से पुनः विवाह करें। इस आदेश से मुक्त कर दें या फिर मुस्लिम रीति से पुनः विवाह करें। इस आदेश की अवहेलना करने के कारण ही सिंध के सरदार दलपत राय को दण्डित किया गया।

(6) उसने तीर्थयात्रा कर को पुनर्जीवित कर दिया जिसे अकबर ने बंद कर दिया था लेकिन बनारस के संत कवीन्द्राचार्य के अनुरोध पर इस आदेश को वापस ले लिया गया।

(7) उसने प्रतिवर्ष एक बड़ी राशि मक्का भेजनी आरम्भ की।

(8) उसने इलाही संवत (अकबर) की जगह हिजरी संवत (शाहजहाँ) का प्रयोग आरम्भ करवाया।

(9) धर्म परिवर्तन करवाने के लिये अपने पदाधिकारियों को प्रोत्साहित किया।

(10) उसने बनारस के आसपास 76 मंदिरों को तुड़वा डाला क्योंकि शरियत के अनुसार कोई भी ताजा सनमखाना (पूजा) नहीं बनाया जा सकता।

(11) उसने गोलकुण्डा के शासक को इस बात के लिए बाध्य किया कि वह अपने अनुचरों में से ईरान के शाह का नाम निकालकर उसका नाम शामिल करें।

शाहजहाँ के उपरोक्त कार्यों से ऐसा लगता है कि वह धार्मिक रूप से असहिष्णु होता चला गया। इसके बावजूद यहीं

Scanned with CamScanner

यह तथ्य उल्लेखनीय है कि उसने अनेक ऐसे कार्य किए जिनसे उसकी सहिष्णुता प्रकट होता है

(1) मनसबदारी व्यवस्था में हिन्दुओं की भागीदारी निरंतर बढ़ती रही।
(2) अपने पूरे शासनकाल में उसने कभी भी जजिया कर नहीं लगाया।
(3) पुराने सनमखाना को नहीं तोड़ा गया।
(4) इस्लामी परम्परा के विरुद्ध संगीत एवं चित्रकला को संरक्षण किया गया एवं इस सम्बंध में मुस्लिम कट्टरपंथियों की बात नहीं मानी गई।

शाहजहाँ की धार्मिक नीति के सम्बंध में यह बात कही जा सकती है कि जहाँ एक ओर उसने अकबर की परम्परा को बनाए रखा वहीं दूसरी ओर अकबर की सुलह-ए-कुल की नीति से हटने की प्रवृति भी दिखाई देती है। पहली बार इस्लामी विचारधारा राजनीतिक फैसलों का आधार बनने लगी। इससे बहुसंख्यक गैर इस्लामी जनता में बादशाह के प्रति अविश्वास उत्पन्न होने लगा। आगे औरंगजेब के शासनकाल में जिस धार्मिक कट्टरता का उदय हुआ उसकी शुरुआत वस्तुतः शाहजहाँ के काल में ही हो गई थी।